



माननीय संचार मंत्री का संदेश – डाक विभाग

सितंबर, 2026 संस्करण

नमस्कार,

भारतीय डाक केवल डाकघरों का नेटवर्क मात्र नहीं अपितु एक ऐसी संस्था है जो नागरिकों को जोड़ती है, आवश्यक सेवाओं को अंतिम छोर तक पहुंचाती है, देश की महत्वपूर्ण स्मृतियों को संजोकर रखती है और इन सबसे बढ़कर यह जनसेवा को अपनी कार्यप्रणाली के केन्द्र में रखती है। सितंबर माह में डाक विभाग ने अपनी सतत विकास यात्रा को जारी रखते हुए निम्न कार्य किए हैं : उन लोगों को सुदृढ़ बनाना जो डाक नेटवर्क के कार्य को संभव बनाते हैं, उन स्थानों का आधुनिकीकरण करना जहां से नागरिकों को सेवा प्रदान की जाती है, हमारी सेवाओं की गति और विश्वसनीयता को बेहतर बनाना, फिलैटली के माध्यम से भारत की धरोहर को संजो कर रखना और विभिन्न समुदायों के साथ भागीदारी को बढ़ाना। भले ही ये सभी पहलें एक-दूसरे से भिन्न प्रकृति की हैं किन्तु इनका उद्देश्य एक ही है : डाक सेवा तक प्रत्येक नागरिक की पहुंच सुनिश्चित करना और इसे आधुनिक तथा उपयोगी बनाना।

सेवाओं को साकार करने वाले कार्यबल को और अधिक सशक्त बनाना

आधुनिक भारतीय डाक की पहचान इसके योग्य, कुशल और भविष्योन्मुखी कार्यबल से ही परिलक्षित होती है। शिवपुरी मध्य प्रदेश में भारत के सातवें 'राष्ट्रीय डाक प्रशिक्षण केंद्र' की नींव रखी जाना इस दिशा में की ओर एक महत्वपूर्ण कदम को दर्शाता है। आधुनिक प्रशिक्षण सुविधाओं से लैस, इस केंद्र में क्षमता निर्माण, नव युगीन प्रौद्योगिकी और समकालीन डाक प्रचालनों पर विशेष रूप बल दिया जाएगा। इससे मध्य प्रदेश और पड़ोसी राज्यों के डाक कर्मचारियों को उनके कार्यक्षेत्र के नजदीक ही विशेष प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होगा। यदि वर्तमान की बात की जाए तो हमारे डाक कर्मचारी केवल पत्र और पार्सल ही डिलीवर नहीं कर रहे, अपितु वे डिजिटल सेवाएं, वित्तीय समावेशन, द्वार पर बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध कराने के अलावा अनेक नागरिक केंद्रित सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। ऐसे में उनके क्षमता संवर्धन पर निवेश करना, जन सेवाओं की गुणवत्ता और पहुंच हेतु निवेश करने समान ही है।

डाकघरों को नागरिक-सेवा केंद्र के रूप में पुनर्परिभाषित करना

कार्यबल की गुणवत्ता के लक्ष्य को तभी प्राप्त किया जा सकता है, जब उन स्थानों व भवनों पर भी उसी मजबूती से ध्यान केंद्रित किया जाए जहां से ये सेवाएं प्रदान की जाती हैं। नवीनीकृत शिवपुरी प्रधान डाकघर का जनसेवा कनेक्ट पहल के तहत किया गया उद्घाटन इसी दृष्टिकोण को इंगित करता है। इसी प्रकार गुना प्रधान डाकघर का रूपांतरण भी इसी परिकल्पना को दर्शाता है। लगभग 38 लाख रुपए की लागत के साथ सुविधाओं में ग्राहक केंद्रित सुधार किए गए हैं। टोकन सिस्टम जहां काउंटर पर प्रतीक्षा हेतु लगने वाले समय को कम करता है, वहीं डिजिटल डिस्पले सेवा में लगने वाले समय की सटीक सूचना प्रदान करता है। डाकघर अब उन आधुनिक सेवा केंद्रों के रूप में उभर कर आ रहे हैं, जहां सेवाओं तक नागरिकों की पहुंच सुनिश्चित करने के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर, प्रौद्योगिकी और व्यक्ति तीनों साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं। आधुनिक सुविधाओं के साथ-साथ तीव्र तथा अधिक विश्वसनीय सेवाएं मुहैया करवाना भी अतिआवश्यक है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु लागू की गई विभाग की 24-स्पीड पोस्ट पार्सल और 24-स्पीड पोस्ट सेवाओं की बुकिंग पफॉर्मैस, निर्धारित लक्ष्यों से कहीं आगे बढ़ गई है, जोकि समय-बाधित डिलीवरी पर जनता के भरोसे का प्रारंभिक संकेत है।

भारत की प्रगति की कहानियों को भावी पीढ़ियों हेतु संरक्षित रखना

भविष्य के लिए तैयारी करने के साथ-साथ, भारतीय डाक उन गाथाओं को भी संरक्षित करके रखता है, जो हमारे भूतकाल और वर्तमान दोनों को आकार देती हैं। डाक टिकट भारत की अमिट कहानी के लघु वृत्तांत हैं, जिनमें महान व्यक्तित्वों, महत्वपूर्ण ऐतिहासिक पड़ावों, उपलब्धियों और देश के राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय महत्व के पलों को सहेज कर रखा जाता है। वर्ष 2006-2026 तक दो दशकों के ब्रिक्स सहयोग को दर्शाते "ब्रिक्स : सहयोग के दो दशक, 2006-2026" विषय पर जारी किए गए स्मारक डाक टिकट, वैश्विक स्तर पर भारत की भागीदारी की महत्वपूर्ण उपलब्धि का प्रतीक हैं। विश्व पटल पर भारत की भूमिका के साथ-साथ फिलैटली हमें देश के सभ्यतागत इतिहास का भी दर्शन करवाती है। संत मलूकदास जी महाराज की स्मृति में जारी किया गया स्मारक डाक टिकट, समर्पण, ज्ञान, करुणा, सेवा और जन कल्याण की विरासत को सम्मान प्रदान करता है। इन दोनों डाक टिकटों को जारी किया जाना दर्शाता है कि किस प्रकार भारतीय डाक, पीढ़ियों से भारत की गाथाओं को संजो कर रख रहा है।

डाकघरों से परे सेवाओं का विस्तार

सेवा का अर्थ केवल काउंटरों से सेवा मुहैया कराने तक ही सीमित नहीं है। इसे विभाग द्वारा, भारत सरकार के 'स्वच्छ भारत अभियान' के तहत चलाई गई पहल 'स्वच्छता ही सेवा' में, भाग लेने के रूप में भी देखा जा सकता है। देशभर के डाकघरों और डाक प्रतिष्ठानों में डाक कर्मचारियों ने स्वच्छता हेतु शपथ ली और विभिन्न स्वच्छता अभियानों तथा श्रमदान में भाग लिया। जिससे पुनः इस बात की पुष्टि होती है कि स्वच्छता केवल प्रशासनिक उत्तरदायित्व नहीं बल्कि एक साझा नागरिक दायित्व है। समुदायों के साथ यह जुड़ाव, भारतीय डाक के विशाल नेटवर्क को निरंतर गतिशील रखने वाले हमारे कर्मिकों के कारण बन पाया है। कहना न होगा कि हमारे यही कर्मिक भारतीय डाक की अंतिम छोर तक डिलीवरी सेवा की रीढ़ हैं।

अंतिम छोर तक पहुंच को और सुदृढ़ बनाना

भारतीय डाक का सामर्थ्य इसकी अतुलनीय पहुंच में निहित है, जिसमें हमारे ग्रामीण डाक सेवक मुख्य भूमिका निभाते हैं। विभाग ने जीडीएस ऑनलाइन नियोजन, अनुसूची-II, जुलाई 2026 चक्र के तहत 23000 से अधिक रिक्तियां अधिसूचित की हैं, जिसमें शाखा पोस्टमास्टर, सहायक शाखा पोस्टमास्टर और डाक सेवक के पद भी शामिल हैं। यही भर्तियां आगे चलकर ग्रामीण भारत में भारतीय डाक के कार्यबल का प्रतिनिधित्व करेंगी। ग्रामीण डाक सेवक की भूमिका अब केवल डाक की डिलीवरी तक ही सीमित नहीं रही, बल्कि आज ग्रामीण स्तर पर, ग्रामीण डाक सेवक अंतिम छोर तक पहुंच में सहायक प्रौद्योगिकी आधारित इकोसिस्टम, इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक के माध्यम से डोरस्टेप बैंकिंग और नागरिक - केंद्रित सेवाओं तक की पहुंच की धुरी के रूप में कार्य करते हैं। इस नेटवर्क को मजबूत बनाकर हम नागरिकों और आवश्यक नागरिक सेवाओं के मध्य कार्य कर रहे पुल को मजबूती प्रदान कर रहे हैं।

भावी योजनाएं

भारतीय डाक के विकास को केवल किसी एक पहल से परिभाषित नहीं किया जा सकता। यह एक सतत यात्रा है, जो कार्यबल, कार्यनिष्पादन, अवसंरचना, प्रौद्योगिकी, विरासत और जन भागीदारी के सामूहिक प्रयासों के साथ आगे बढ़ रही है। इस यात्रा में उठाया गया हरेक कदम भारतीय डाक को अपने कालातीत सिद्धान्त 'डाक सेवा, जन सेवा' से जोड़े रखते हुए और अधिक सक्षम, तत्पर तथा देशव्यापी पहुंच वाले संस्थान के रूप में और अधिक सुदृढ़ बनाने का कार्य कर रहा है।

जय हिंद !

ज्योतिरादित्य भा. सिंधिया

संचार एवं उत्तर-पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्री

भारत सरकार